IJAER/ July-August -2022/Volume-11/Issue-4 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

जहानाबाद जिले में उच्च माध्यमिक स्तर के कला व वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन

Dhananjai Kumar
Research Scholar
Deptt. of Education
B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

Dr. Shakila Azim
Associate Professor
Deptt. of Psychology
M.D.D.M. College, Muzaffarpur

1.1 सार–

वर्तमान में प्रकृति के साथ कुछ ऐसा ही हो रहा है। प्रकृति ने हमें प्राकृतिक संसाधन जैसे वायु, जल, भूमि व खनिज पदार्थ आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराये है। परन्तु जनसंख्या वृद्धि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोाषण एवं औद्योगिक विकास योजनाओं के कार्यान्वयन मे पर्यावरण की उपेक्षा आदि कार्यों से पर्यावरण के घटकों में कई प्रतिकूल परिवर्तन आये हैं। कहा जाता है कि प्रकृति हर ऐसी चीज का मनुष्यजात से प्रतिशोध लेती है जो प्रकृति की क्षय के लिए जिम्मेदार हो। पहले यह समस्या एक हल्के रूप में ली जाती थी परन्तु आजकल हमारे देश में प्रदूषण की समस्या के निवारण के लिए अनेक प्रयास किये जा रहें हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च माध्यमिक स्तर के कला व वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

1.2 प्रस्तावना–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक होने से उसका नैतिक कर्तव्य बनता है कि वह पर्यावरण के साथ अपना सजीव रिश्ता कायम रखे। पर्यावरण और उसके विशिष्ट आयामों की पहचान कर उसका अध्ययन करना ही पर्यावरण के अन्तर्गत आता है।

प्रदूषण का अर्थ है–जैवमण्डल में किसी संघटन का प्रत्यक्ष या परोक्ष परिवर्तन जो अवांछनीय हौने के कारण मानव समेत सभी जीवौं के लिए संकट पैदा करता है। जिससे मानव की औद्यौगिक, सांस्कृतिक और नैतिक सम्पत्ति को हानि पहुंचती है व पर्यावरण की गुणवत्ता नष्ट होती है।

बसंतलाल जैन के अनुसार–"पर्यावरण प्रदूषण वाणिज्य और प्रौद्यौगिकी की देन है, महानगरीय जीवन की सौगात है, विशाल उद्यौगों की समृद्धि का बौनस है, मानव को मृत्यु के मुंह में धकेलने की अनचाही चेष्टा है, रोगौं को शरीर में प्रवेश करने का मौन निमंत्रण है और प्राणी के अमंगल की अप्रत्यक्ष कामना है"।

विश्वकोश के अनुसार–"पर्यावरण के अन्तर्गत उन सभी दशाओं, संगठन और प्रभावों को शामिल किया जाता है। जो किसी जीव अथवा प्रजाति के उद्‌भव, विकास एवं मृत्यु को प्रभावित करती है"।
शिक्षा मानव जीवन के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। जब किसी राष्ट्र या समाज में परिवर्तन व जन–चेतना की आवश्यकता का अनुभव हुआ है तब बुद्धिजीवी वर्ग की निगाहें शिक्षा पर ही आकर टिकी है। इसी को ध्यान में रखते हुये पर्यावरण रक्षा के लिए वर्तमान में पर्यावरणीय शिक्षा को प्रत्येक स्तर के पाठ्यक्रम में विशेष स्थान दिये जाने पर जोर दिया जा रहा हैं। पर्यावरणीय रक्षा हेतु विश्वस्तरीय प्रयास भी किए गये हैं। अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का ध्यान इस ज्वलंत समस्या की ओर है। विश्व स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में रिपब्लिक ऑफ कोरिया में नेशनल काउन्सिल की स्थापना प्रकृति के संरक्षण के लिए की है। जो कि राष्ट्र के सभी व्यक्तियों को

पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करने का कार्य सम्भालती है। पर्यावरण के अध्ययन के सन्दर्भ में यूनेस्को कार्य समिति (1970) तथा मानव पर्यावरण पर स्टॉकहोम (1972) में आयोजित हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी यही बात रखी गई कि पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम की सम्भावना को मूर्त रूप दिया जाये।

यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन (1977) में पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों का प्रतिपादन किया गया। जिसमें सभी स्तरो तथा औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा के उद्देश्यों का विशिष्टीकरण किया गया। विश्वस्तरीय प्रयासों के साथ ही साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक नवीन संस्थाओं का गठन हुआ तथा समय–समय पर विभिन्न आयोगों ने भी पर्यावरणीय संरक्षण हेतु पाठ्यक्रम में भारतीय सांस्कृतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा को सम्मिलित करने का सुझाव दिया। माध्यमिक स्तर पर एन.सी.ई आर.टी. द्वारा इस क्षेत्र में विशेष बल दिया जा रहा है। विभिन्न आयोगों के सुझावों कुलस्वरूप पर्यावरणीय शिक्षा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर रखा गया है। माध्यमिक स्तर पर निर्धारित पाठ्यक्रम के द्वारा एक निश्चित सीमा तक छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। 'डॉ0 जाकिर हुसैन' चाहते थे कि पर्यावरण तथा उत्पादन कार्यो को सीखने के केन्द्रों के रूप में प्रयोग किया जाये। उनका कथन था कि गाँधीजी की बेसिक शिक्षा में सहसम्बन्ध के तीन केन्द्र है– प्राकृतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, हस्तकार्य। इन केन्द्रों का प्रयोग बालक की उच्चतम योग्यता को विकसित करने के लिए करना चाहिए। 'कोठारी शिक्षा आयोग (1964) तथा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संस्तुति की गयी कि छात्रों को भौतिक तथा जैविक पर्यावरण के सन्दर्भ में जानकारी दी जानी चाहिए तथा विद्यालय के अध्ययन विषयो के साथ पर्यावरण अध्ययन को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

परन्तु निश्चय ही यह विचरणीय प्रश्न है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा को सम्मिलित करने के बाद भी उसके उद्देश्यों की प्राप्ति विफल रही है। इस असफलता का क्या कारण है? इसका अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण पाश्चात्यवाद एवं औद्योगिक विकास कुलस्वरूप हमारी संस्कृति का ह्रास है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयासों के बाद भी परिणाम नकारात्मक रहे तथा शिक्षित वर्ग को वातावरण के प्रति जागरूक बनाने में असफल हैं। भारतीय संस्कृति का ह्रास एवं आसुरी संस्कृति तथा भौतिकवाद का उदय ही पर्यावरण के प्रति जागरूकता के उद्देश्यों की प्राप्ति में बाधक है।

यद्यपि पर्यावरणीय जागरूकता एवं संस्कृति से सम्बन्धित अनेक शोध अध्ययन सम्पूर्ण विश्व यथा– अमेरिका, फ्रांस, इग्लैण्ड, रूस, अरब देश, पाकिस्तान, भारत, चीन, वियतनाम, इण्डोनेशिया, जापान में सम्पन्न हुये, अनेक लेख भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका चंसपी में प्रकाशित हुये है तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संगोष्ठियों के माध्यम से पर्यावरणीय संरक्षण के लिए चतुर्दिश प्रयास किए जा रहे है, जिनमें विद्यार्थियों एवं समाज को पर्यावरण के प्रति जागरुक बनाना प्रमुख है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के विभिन्न स्तरों यथा प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च, व्यवसायिक विशेष रूप में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु, पर्यावरण जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में यौन–भैद, सामाजिक–आर्थिक स्तर, शिक्षा स्तर, आवासीय संस्कृति (ग्रामीण.शहरी) आदि चरो के परिप्रेक्ष्य में अनेक सर्वेक्षणात्मक एवं प्रयोगात्मक शोध कार्य सम्पन्न हुये हैं।

इस सन्दर्भ में शोधार्थी सीमित शोध अध्ययनों यथा हर्डी एवुांक्स (1976), सज़ागुन एवं पावलॉव (1995), मैक्इलवीने (1996), क्राउच (2004), गुप्ता, ग्रेवाल एवं राजपूत (1981), दवे (1997), राय (2000), अनुदीपिका (2003), भोले एवं भान्गले (2003) आदि को प्राप्त करने में समर्थ रही है। उक्त दर्शित विभिन्न शोधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर विदित होता है कि विभिन्न राष्ट्रों में उनके विशिष्ट

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में कतिपय चर लेकर शोध कार्य सम्पन्न किये गये है। किन्तु इस परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन नही किया गया है कि बिषय वर्ग विद्यार्थी की पर्यावरण जागरूकता को किस सीमा तक प्रभावित करता है। उक्त परिसन्दर्भो में यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला व वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में क्या अन्तर है। उक्त यक्ष प्रश्न के उत्तर के परिप्रेक्ष्य में ही शोधार्थी ने निम्न शोध समस्या का चयन शोध के निमित्त किया।

1.3 पर्यावरण और शिक्षा में सम्बन्ध

'पर्यावरण' तथा 'शिक्षा' शब्दों तथा इनके प्रत्ययों के अर्थ से यह स्पष्ट होता है कि दोनों में विकास को महत्व दिया जाता है। पर्यावरण में वातावरण को गुणवत्ता तथा शिक्षा में व्यक्ति की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जाती है। शिक्षा का विकास की प्रक्रिया कहते हैं तथा पर्यावरण में आन्तरिक तथा बाह्य सम्पूर्ण परिस्थितियों को सम्मिलित किया जाता है, मनुष्य तथा अन्य जीवों की अभिवृद्धि तथा विकास को प्रभावित करती है। प्रत्येक जीव तथा प्राणी का अपना पर्यावरण होता है। मनुष्य का वातावरण भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक होता है। शिक्षा द्वारा इनकी गुणवत्ता के लिये परिवर्तन तथा सुधार भी किया जाता है जिससे बालकों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाया जा सके। मनुष्य तथा बालकों के व्यवहार परिवर्तन में वातावरण का विशेष महत्व है।

वाटसन –मनोवैज्ञानिक का विश्वास है कि वातावरण द्वारा बालक को जैसे चाहें वैसा बनाया जा सकता है। वंशानुक्रम का कोई महत्व नहीं है।
बनार्ड ने पर्यावरण तथा शिक्षा के सम्बन्ध को प्रदर्शित किया है शिक्षा की विकास की क्रिया का सम्पादन विद्यालय तथा कक्षा के अन्तर्गत होता है। कक्षा के अन्तर्गत शिक्षा तथा छात्रों के मध्य अन्तः प्रक्रिया होती है।

शिक्षक कक्षा के प्रकरण की सहायता से क्रियायें करता है जो शाब्दिक तथा अशाब्दिक होती हैं जिससे सामाजिक तथा भावात्मक वातावरण उत्पन्न होता है। छात्रों को नये अनुभव प्राप्त होते हैं तथा कुछ करने का अवसर मिलता है जिससे वे सीखते हैं तथा अपेक्षित वातावरण प्रस्तुत करते हैं। माता–पिता तथा अभिभावक अच्छी–शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश इसलिए दिलाना चाहते हैं, वहां उन्हें उत्तम प्रकार का वातावरण मिल सके। इस प्रकार शिक्षा के विकास की प्रक्रिया का सम्पादन, भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक वातावरण में होता है।

चैम्बर्स डिक्शनरी के अनुसार–''पर्यावरण शिक्षा एक ऐसा अध्ययन क्षेत्र है, जिसमें जन्तुओं, पेड़–पौधे तथा मनुष्य समुदायों के अपने वातावरण के साथ अंतर संबंधों की व्याख्यायिता जाता है। पर्यावरण के साथ जीवधारियों का जो भी आदान–प्रदान होता है। जो भी अन्तः क्रियाएँ अथवा अर्न्तसंबंध बनते हैं, उनका वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना ही पर्यावरण शिक्षा है।''
ब्रिटिश पर्यावरणविद् स्वान के अनुसार–''पर्यावरण की गुणवत्ता के प्रति चिंता के दृष्टिकोण का विकास करना ही पर्यावरण शिक्षा है।''

1.4 परिकल्पनाएँ

- उच्च माध्यमिक स्तर के कला व वाणिज्य वर्ग के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला व वाणिज्य वर्ग की छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर

नहीं होता है।

- उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1.5 प्रतिदर्श

शोध के सन्दर्भ में प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रतिदर्श चयन के निमित्त बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि का अनुसरण किया गया। प्रथम स्तर पर यादृच्छिक चयन विधि द्वारा जहानाबाद जिले से माध्यमिक स्तर के विद्यालय चयनित किये गये। द्वितीय स्तर पर चयनित विद्यालयों में से कक्षा एकादश् में अध्ययनरत् 400 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। प्रतिदर्श की विभिन्न इकाईयों तथा उनकी संख्या को तालिका में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका

निर्धारित प्रतिदर्श की विभिन्न इकाईयों का वितरण

क्र.सं.	समूह	वाणिज्य वर्ग	कला वर्ग	योग
1	बालक	100	100	200
2	बालिकाएँ	100	100	200
	योग	200	200	400

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोध से सम्बन्धित एकत्रित प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन व टी– परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिणाम तथा विवेचन

उच्च माध्यमिक स्तर के कला व वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करने हेतु पर्यावरण जागरूकता परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक–विचलन तथा विभिन्न वर्गों के मध्य मध्यमानों के अन्तर की सत्यता ज्ञात करने के लिये टी–मान की गणना की गयी, जिसे तालिका–1 व तालिका–2 में दर्शाया गया है।

तालिका 1

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का मध्यमान व मानक विचलन

संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
400	38.97	4.983

तलिका 2

कला व वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के सांख्यिकीय मानों का परिदृश्य

समूह		संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	पी वेल्यू
कला वर्ग	छात्र	100	37.50	5.50	छात्र – वाणिज्य एवं कला वर्ग	1.941 (p<.05)
	छात्राएँ	100	39.12	4.47	छात्रा – वाणिज्य एवं कला वर्ग	0.538 (p<.05)
वाणिज्य वर्ग	छात्र	100	39.66	5.83	कला वर्ग – छात्र एवं छात्रा	1.616 (p<.05)
	छात्राएँ	100	39.56	3.68	वाणिज्य वर्ग – छात्र एवं छात्रा	0.143 (p<.05)
कुल	कला	200	38.31	5.05	कुल – वाणिज्य एवं कला वर्ग	1.884 (p<.05)
	वाणिज्य	200	39.61	4.85		

तलिका–1 में प्रदर्शित मध्यमान के मान से (38.97) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता मध्यमान से उच्च स्तर की परिलक्षित हो रही है, अर्थात छात्र पर्यावरण को शुद्ध रखने के प्रति सचेत है। वही मानक विच्नल का निम्न मान समूह में निम्न विचलनशीलता अर्थात

समूह में समजातीय को प्रदर्शित करता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सचेतनता औपचारिक. अनौपचारिक व सहज शिक्षा के साधनों से प्राप्त शिक्षा के कारण हो सकती है क्योंकि वर्तमान समय में पर्यावरण के गिरते स्तर के कारण विश्व समुदाय चिन्तित है तथा इसके संरक्षण के लिए प्रत्येक प्रकार के साधनों का प्रयोग कर रहा है जिसमें जन संचार के माध्यम तथा पारिवारिक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों में पर्यावरण स्वच्छता तथा प्रदूषण नियन्त्रण के तरीको को विकसित करने के प्रति प्रयत्नशील रहते हैं। अतः इस कारण से इस समूह के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता पायी गयी।

तलिका–2 में प्रदर्शित सांख्यिकीय दृष्टि से 0.05 स्तर पर भी असार्थक टी–मान इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित परिकल्पनाओं को स्वीकृत करते है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर के कला व वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की तथा छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है। जबकि सामान्यतः यह तथ्य अधिकतर स्वीकृत किया जाता है कि वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता अधिक पायी जाती है, क्योंकि उन्हें भौतिक पर्यावरण के विभिन्न घटकों का ज्ञान, वाणिज्य विषय के अध्ययन के कारण हो जाता है। परन्तु तालिका में प्रदर्शित मान इस तथ्य को अस्वीकृत करता है, क्योंकि वर्तमान में 10वीं कक्षा तक सामान्य वाणिज्य का पाठ्यक्रम अनिवार्य है जिसके कारण कला वर्ग के विद्यार्थियों में भी कुछ सीमा तक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक चिन्तन तथा वाणिज्य की विषयवस्तु का ज्ञान विकसित हो जाता है, साथ ही वर्तमान में माता–पिता अपने बच्चों के विकास के प्रति अधिक सचेतन व प्रयत्नशील होते हैं तथा बालक व बालिकाओं को समान शैक्षिक व पारिवारिक वातावरण प्रदान करते है, उनके विकास में व्यक्तिगत रुचि लेते हैं, जिसके करण समान शिक्षा, समान पारिवारिक वातावरण, माता–पिता के समान दृष्टिकोण के कारण बालक व बालिकाओं में सामान्य से उच्च पर्यावरण जागरूकता तथा अन्तर का अभाव दृष्टिगोचर होता है।

1.6 निष्कर्ष

पर्यावरण के गिरते स्तर ने विश्व समुदाय को चिन्तित कर दिया है इसी परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण हेतु सन् 1972 में स्टॉकहोम में अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक देश अपने लोगों में पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता विकसित करे। अगर हम अपनी संस्कृति एवं वेदो, साहित्य पर दृष्टिपात करे तो भारत देश में सर्व मंगलम् व सर्वकुशलम् की संस्कृति तथा सामवेद में वर्णित मानव व प्रकृति के अटूट सम्बन्ध से पर्यावरण सुरक्षित व पल्लवित था। तो आज यह प्रश्न उत्कठिंत होता है कि आज इस पर्यावरणीय संकट काल में अपने अतीत की धरोहर से शिक्षा क्यों न ग्रहण करे तथा संस्कृति व धर्म का आधार लेकर पर्यावरणीय संकट के विकराल राक्षस का वध क्यों न करे। इसी तथ्य को दृष्टिगत कर शोधार्थी ने इस समस्या से पर्यावरण विशेषज्ञो का ध्यान आकर्षित करने की चेष्टा की है। पर्यावरण जागरूकता को विकसित करने के लिए वेदों में उद्धरित श्लोकों के अर्थ को जानकर उसका प्रयोग करे। मानव व प्रकृति के मध्य प्राचीन सम्बन्ध को विकसित करे। प्रजातान्त्रिाक मूल्य व पारिवारिक मूल्य व संस्कृति का भी पर्यावरण जागरूकता पर प्रभाव पड़ता है। अतः पर्यावरण विशेषज्ञ पर्यावरण संरक्षण हेतु इन मूल्यों के विकास हेतु प्रयास करे तथा पर्यावरण जागरूकता विकसित करने में अन्य साधनो के साथ इनका भी प्रयोग करे, तो पर्यावरणीय संकट को दूर करने में सहायता प्राप्त होगी।

इस शोध से प्राप्त परिणाम शिक्षाविदों को चिन्तन के लिए अभिप्रेरित करते है कि वह माध्यमिक स्तर की शिक्षा में धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य व पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य तथा संस्कृति का विकास करने हेतु पाठ्यक्रम का सृजन करे। पर्यावरणीय शिक्षा के पाठ्यक्रम में वेदों में उद्धरित श्लोकों का अर्थ तथा प्राचीन समय में मानव व प्रकृति के सम्बन्धों को वर्णित करे। भारतीय संस्कृति के भाव ''सर्वे

भवन्तु सुखिनः'' जैसे मूल्य विकसित करने हेतु पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन करे, क्योंकि वर्तमान पाठ्यक्रम छात्र व छात्राओं में उच्च पर्यावरण जागरूकता विकसित नही कर रहा है। अतः शोध के परिणामों को क्रियान्वित करने की चेष्टा की जाये तो पर्यावरणीय जागरूकता उच्च स्तर की विकसित होगी। अतः पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता बालकों के अनिवार्य पाठ्यक्रम में इन मूल्यों को विकसित करने वाले पाठ्यक्रम का सृजन करे तथा शिक्षा नीति निर्धारण करते समय इन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन व पुर्ननिर्माण करे।

1.7 संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- अनुदीपिका (2003) नगरीय एवं ग्रामीण, कला व वाणिज्य वर्ग के छात्रा एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित एम. एड. लघु शोध प्रबंध, (शिक्षा), बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
- चौहान, एस (1989) पर्यावरण जागरूकता परीक्षण का निर्माण। अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध.प्रबंध, दयालबाग एड्यूकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा।
- शर्मा, शालिनी (2003) विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के छात्रा–छात्राओं के सांस्कृतिक नियतत्व का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध. प्रबन्ध, बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।
- चन्डोला, पी. (1991) ''प्रदूषण पृथ्वी का गृहण'' हिमालय पुस्तक भण्डार, नई दिल्ली।
- चौधरी, रेनू (2007)''पर्यावरण अध्ययन एवं शिक्षण'' ज्ञान भारती प्रकाशन न्यू कॉलोनी, जयपुर।
- चन्द्रा, संस (2011) ''पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य'' आर्य पब्लिकेशन नई दिल्ली, 1985।
- डौडियाल, सच्चिदानन्द (2018) ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
- गोयल, एम.के. (2005) ''पर्यावरण शिक्षा'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- गोपालकृष्णा, सरोजिनी (2016) ''प्राथमिक शालाओं के बच्चों पर पर्यावरणीय शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन पी.एच.डी. शिक्षा।
- गोपाल सिंह, (1997) ''पर्यावरण शिक्षा'' लायल बुक डिपो, मेरठ।
- जी.सी., महाचार्य (1996) ''बनारस के प्राथमिक स्तर की छात्राओं और उनमें अभिभावकों में पर्यावरण अवचेतना का अध्ययन'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।